मानवीय सरोकारों के प्रतिबद्ध साहित्यकार

प्रो. अर्चना जैन

23, वात्सल्य फ्लैट, वकील बाड़ी, एल.जी. हॉस्पिटल के पास, मणिनगर अहमदाबाद- 388 (गुजरात)
मो 79-25462646

भीष्म साहनी एक ऐसे प्रतिबद्ध रचनाकार हैं जिनके संपूर्ण साहित्य में कटु यथार्थ की अभिव्यक्ति है। कहानी, उपन्यास, नाट्य-साहित्य की इन तीनों विधाओं में साहनीजी ने साहित्य-सृजन किया है। इनके कथा-साहित्य पर प्रेमचंद और यशपाल की गहरी छाप देखी जा सकती है। यद्यपि साहनीजी ने प्रेमचंद और यशपाल की ग्रामीण जीवन-शैली को नहीं अपनाया है, किन्तु फिर भी वे इन दोनों साहित्यकारों से प्रभावित अवश्य रहे हैं।

साहनीजी के साहित्य का केन्द्र-बिन्दु मध्य वर्ग है। उन्होंने अपने साहित्य में यथार्थ का ऐसा रचनात्मक चित्रण किया है, जिसे पढ़कर पाठक तिलमिला जाता है और पूंजीवाद को बल देने वाली प्रवृत्तियों के प्रति आक्रोश से भर उठता है। उनकी रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि मध्य वर्ग और निम्न वर्ग पूंजीवाद और सामंतवाद के शोषण का किस सीमा तक शिकार हुए हैं। साहनीजी की सूक्ष्म और पैनी दृष्टि वहां तक पहुंची है जहां तक सामाजिक दूषणों की जड़ें फैली हैं। समाज में व्याप्त किसी भी अनाचार को वे अपने व्यंग्य-बाणों का निशाना बनाने से नहीं चूकते। अधिकांशतः पूंजीवादी और सामंतवादी ही उनके व्यंग्य का शिकार हुए हैं, जबकि मज़दूर और शोषित वर्ग तो उनकी सहानुभूति के पात्र हैं। इस सामाजिक विषमता के भयंकर परिणामों से भी वे हमें अवगत कराते हैं। पूंजीवाद समाज में संस्कारहीनता, साम्प्रदायिकता, भेदभाव आदि कुरीतियों को जन्म देता है और अंततः उसकी परिणति अराजकता, अपराध, रक्तपात जैसी दुष्प्रवृत्तियों में होती है।

साहनीजी की प्रतिबद्धता को हम दो रूपों में विभक्त कर सकते हैं : 1. सामाजिक